॥ श्रीकुमारी सहस्रनामम् ॥

आनन्दभैरव उवाच

वद कान्ते सदानन्दस्वरूपानन्दवल्लभे।

कुमार्या देवतामुख्याः परमानन्दवर्धनम्॥ १॥

अष्टोत्तरसहस्राख्यं नाम मङ्गलमद्भुतम्

यदि मे वर्तते विद्ये यदि स्नेहकलामला॥ २॥

तदा वदस्व कौमारीकृतकर्मफलप्रदम्

महास्तोत्रं कोटिकोटि कन्यादानफलं भवेत्॥ ३॥

आनन्दभैरवी उवाच

महापुण्यप्रदं नाथ श्रृणु सर्वेश्वरप्रिय।

अष्टोत्तरसहस्राख्यं कुमार्याः परमाद्भुतम्॥ ४॥

पठित्त्वा धारयित्त्वा वा नरो मुच्येत सङ्कटात्।

सर्वत्र दुर्लभं धन्यं धन्यलोकनिषेवितम्॥ ५॥

अणिमाद्यष्टसिद्ध्यङ्गं सर्वानन्दकरं परम्।

मायामन्त्रनिरस्ताङ्गं मन्त्रसिद्धिप्रदे नृणाम्॥ ६॥

न पूजा न जपं स्नानं पुरश्चर्याविधिश्च न।

अकस्मात् सिद्धिमवाप्नोति सहस्रनामपाठतः॥ ७॥

सर्वयज्ञफलं नाथ प्राप्नोति साधकः क्षणात्।

मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं योनिमुद्रास्वरूपकम्॥ ८॥

कोटिवर्षशतेनापि फलं वक्तुं न शक्यते।

तथापि वक्तुमिच्चामि हिताय जगतां प्रभो॥ ९॥

अस्याः श्रीकुमार्याः सहस्रनामकवचस्य वटुकभैरवऋषिरनुष्टुप्छन्दः

कुमारीदेवता सर्वमन्त्रसिद्धिसमृद्धये विनियोगः॥ १०॥

ओं कुमारी कौशिकी काली कुरुकुल्ला कुलेश्वरी।

कनकाभा काञ्चनाभा कमला कालकामिनी॥ ११॥

कपालिनी कालरूपा कौमारी कुलपालिका।

कान्ता कुमारकान्ता च कारणा करिगामिनी॥ १२॥

कन्धकान्ता कौलकान्ता कृतकर्मफलप्रदा।

कार्याकार्यप्रिया कक्षा कंसहन्त्री कुरुक्षया॥ १३॥

कृष्णकान्ता कालरात्रिः कर्णेषुधारिणीकरा।

कामहा कपिला काला कालिका कुरुकामिनी॥ १४॥

कुरुक्षेत्रप्रिया कौला कुन्ती कामातुरा कचा।

कलञ्जभक्षा कैकेयी काकपुच्छध्वजा कला॥ १५॥

कमला कामलक्ष्मी च कमलाननकामिनी।

कामधेनुस्वरूपा च कामहा काममर्दिनी॥ १६॥

कामदा कामपूज्या च कामातीता कलावती।

भैरवी कारणाढ्या च कैशोरी कुशलाङ्गला॥ १७॥

कम्बुग्रीवा कृष्णनिभा कामराजप्रियाकृतिः।

कङ्कणालङ्कृता कङ्का केवला काकिनी किरा॥ १८॥

किरातिनी काकभक्षा करालवदना कृशा।

केशिनी केशिहा केशा कासाम्बष्ठा करिप्रिया॥ १९॥

कविनाथस्वरूपा च कटुवाणी कटुस्थिता।

कोटरा कोटराक्षी च करनाटकवासिनी॥ २०॥

कटकस्था काष्ठसंस्था कन्दर्पा केतकी प्रिया।
केलिप्रिया कम्बलस्था कालदैत्यविनाशिनी॥ २१॥
केतकीपुष्पशोभाढ्या कर्पूरपूर्णजिह्विका।
कर्पूराकरकाकोला कैलासगिरिवासिनी॥ २२॥
कुशासनस्था कादम्बा कुञ्जरेशी कुलानना।
खर्बा खड्गधरा खड्गा खलहा खलबुद्धिदा॥ २३॥
खञ्जना खररूपा च क्षाराम्लतिक्तमध्यगा।
खेलना खेटककरा खरवाक्या खरोत्कटा॥ २४॥
खद्योतचञ्चला खेला खद्योता खगवाहिनी।
खेटकस्था खलाखस्था खेचरी खेचरप्रिया॥ २५॥
खचरा खरप्रेमा खलाढ्या खचरानना।
खेचरेशी खरोग्रा च खेचरप्रियभाषिणी॥ २६॥
खर्जूरासवसंमत्ता खर्जूरफलभोगिनी।
खातमध्यस्थिता खाता खाताम्बुपरिपूरिणी॥ २७॥
ख्यातिः ख्यातजलानन्दा खुलना खञ्जनागतिः।
खल्वा खलतरा खारी खरोद्वेगनिकृन्तनी॥ २८॥
गगनस्था च भीता च गभीरनादिनी गया।
गङ्गा गभीरा गौरी च गणनाथ प्रिया गतिः॥ २९॥
गुरुभक्ता ग्वालिहीना गेहिनी गोपिनी गिरा।
गोगणस्था गाणपत्या गिरिजा गिरिपूजिता३०॥
गिरिकान्ता गणस्था च गिरिकन्या गणेश्वरी।
गाधिराजसुता ग्रीवा गुर्वी गुर्व्यम्बशाङ्करी॥ ३१॥
गन्धर्व्वकामिनी गीता गायत्री गुणदा गुणा।

गुग्गुलुस्था गुरोः पूज्या गीतानन्दप्रकाशिनी॥ ३२॥

गयासुरप्रियागेहा गवाक्षजालमध्यगा।

गुरुकन्या गुरोः पत्नी गहना गुरुनागिनी॥ ३३॥

गुल्फवायुस्थिता गुल्फा गर्द्दभा गर्द्दभप्रिया।

गुह्या गुह्यगणस्था च गरिमा गौरिका गुदा॥ ३४॥

गुदोर्ध्वस्था च गलिता गणिका गोलका गला।

गान्धर्वी गाननगरी गन्धर्वगणपूजिता॥ ३५॥

घोरनादा घोरमुखी घोरा घर्मनिवारिणी।

घनदा घनवर्णा च घनवाहनवाहना॥ ३६॥

घर्घरध्वनिचपला घटाघटपटाघटा।

घटिता घटना घोना घनरुप घनेश्वरी॥ ३७॥

घुण्यातीता घर्घरा च घोराननविमोहिनी।

घोरनेत्रा घनरुचा घोरभैरव कन्यका॥ ३८॥

घाताघातकहा घात्या घ्राणाघ्राणेशवायवी।

घोरान्धकारसंस्था च घसना घस्वरा घरा॥ ३९॥

घोटकेस्था घोटका च घोटकेश्वरवाहना।

घननीलमणिश्यामा घर्घरेश्वरकामिनी॥ ४०॥

ङकारकूटसम्पन्ना ङकारचक्रगामिनी।

ङकारी ङसंज्ञा चैव ङीपनीता ङकारिणी॥ ४१॥

चन्द्रमण्डलमध्यस्था चतुरा चारुहासिनी।

चारुचन्द्रमुखी चैव चलङ्गमगतिप्रिया॥ ४२॥

चञ्चला चपला चण्डी चेकिताना चरुस्थिता।

चलिता चानना चार्व्वो चारुभ्रमरनादिनी॥ ४३॥

चौरहा चन्द्रनिलया चैन्द्री चन्द्रपुरस्थिता।

चक्रकौला चक्ररूपा चक्रस्था चक्रसिद्धिदा॥ ४४॥

चक्रिणी चक्रहस्ता च चक्रनाथकुलप्रिया।

चक्राभेद्या चक्रकुला चक्रमण्डलशोभिता॥ ४५॥

चक्रेश्वरप्रिया चेला चेलाजिनकुशोत्तरा।

चतुर्वेदस्थिता चण्डा चन्द्रकोटिसुशीतला॥ ४६॥

चतुर्गुणा चन्द्रवर्णा चातुरी चतुरप्रिया।

चक्षुःस्था चक्षुवसतिश्चणका चणकप्रिया॥ ४७॥

चार्व्वङ्गी चन्द्रनिलया चलदम्बुजलोचना।

चर्व्वरीशा चारुमुखी चारुदन्ता चरस्थिता॥ ४८॥

चसकस्थासवा चेता चेतःस्था चैत्रपूजिता।

चाक्षुषी चन्द्रमलिनी चन्द्रहासमणिप्रभा॥ ४९॥

चलस्था चुद्ररूपा च चत्रचायाचलस्थिता।

चलङ्गा चेश्वराचाया चाया चिन्नशिवा चला५०।

चत्राचामरशोभाढ्या चत्रिणां चत्रधारिणी।

चिन्नातीता चिन्नमस्ता चिन्नकेशा चलोद्भवा॥ ५१॥

चलहा चलदा चाया चन्ना चन्नजनप्रिया।

चलचिन्ना चद्मवती चद्मसद्मनिवासिनी॥ ५२॥

चद्मगन्धा चदाचन्ना चद्मवेशी चकारिका।

चगला रक्तभक्षा च चगलामोदरक्तपा॥ ५३॥

चगलण्डेशकन्या च चगलण्डकुमारिका।

चुरिका चुरिककरा चुरिकारिनिवाशिनी॥ ५४॥

चिन्ननाशा चिन्नहस्ता चोणलोला चलोदरी।

चलोद्वेगा चाङ्गबीजमाला चाङ्गवरप्रदा॥ ५५॥

जटिला जठरश्रीदा जरा जङ्घाप्रिया जया।

जन्त्रस्था जीवहा जीवा जयदा जीवयोगदा५६।

जयिनी जामलस्था च जामलोद्भवनायिका।

जामलप्रियकन्या च जामलेशी जवाप्रिया॥ ५७॥

जवाकोटिसमप्रख्या जवापुष्पप्रिया जना।

जलस्था जगविषया जरातीता जलस्थिता॥ ५८॥

जीवहा जीवकन्या च जनार्द्दनकुमारिका।

जतुका जलपूज्या च जगन्नाथादिकामिनी॥ ५९॥

जीर्णाङ्गी जीर्णहीना च जीमूतात्त्यन्तशोभिता।

जामदा जमदा जृम्भा जृम्भणास्त्रादिधारिणी६०॥

जघन्या जारजा प्रीता जगदानन्दवर्द्धीनी।

जमलार्जुनदर्पघ्नी जमलार्जुनभञ्जिनी॥ ६१॥

जयित्रीजगदानन्दा जामलोल्लाससिद्धिदा।

जपमाला जाप्यसिद्धिर्जपयज्ञप्रकाशिनी॥ ६२॥

जाम्बुवती जाम्बवतः कन्यकाजनवाजपा।

जवाहन्त्री जगद्बुद्धिर्ज्जगत्कर्तृ जगद्गतिः॥ ६३॥

जननी जीवनी जाया जगन्माता जनेश्वरी

झङ्कला झङ्कमध्यस्था झणत्कारस्वरूपिणी॥ ६४॥

झणत्झणद्वह्विरूपा झननाझन्दरीश्वरी।

झटिताक्षा झरा झञ्झा झर्झरा झरकन्यका॥ ६५॥

झणत्कारी झना झन्ना झकारमालयावृता।

झङ्करी झर्झरी झल्ली झल्वेश्वरनिवासिनी॥ ६६॥

ञकारी ञकिराती च ञकारबीजमालिनी।

ञनयोन्ता ञकारान्ता ञकारपरमेश्वरी॥ ६७॥

ञान्तबीजपुटाकारा ञेकले ञैकगामिनी।

ञैकनेला ञस्वरूपा ञहारा ञहरीतकी॥ ६८॥

टुन्टुनी टङ्कहस्ता च टान्तवर्गा टलावती।

टपला टापबालाख्या टङ्कारध्वनिरूपिणी॥ ६९॥

टलाती टाक्षरातीता टित्कारादिकुमारिका।

टङ्कास्त्रधारिणी टाना टमोटार्णलभाषिणी॥ ७०॥

टङ्कारी विधना टाका टकाटकविमोहिनी।

टङ्कारधरनामाहा टिवीखेचरनादिनी॥ ७१॥

ठठङ्कारी ठाठरूपा ठकारबीजकारणा।

डमरूप्रियवाद्या च डामरस्था डबीजिका॥ ७२॥

डान्तवर्गा डमरुका डरस्था डोरडामरा।

डगरार्द्धा डलातीता डदारुकेश्वरी डुता॥ ७३॥

ढार्द्धनारीश्वरा ढामा ढक्कारी ढलना ढला।

ढकेस्था ढेश्वरसुता ढेमनाभावढोनना॥ ७४॥

णोमाकान्तेश्वरी णान्तवर्गस्था णतुनावती।

णनो माणाङ्ककल्याणी णाक्षवीणाक्षबीजिका॥ ७५॥

तुलसीतन्तुसूक्ष्माख्या तारल्या तैलगन्धिका।

तपस्या तापससुता तारिणी तरुणी तला॥ ७६॥

तन्त्रस्था तारकब्रह्मस्वरूपा तन्तुमध्यगा।

तालभक्षत्रिधामूर्त्तीस्तारका तैलभक्षिका॥ ७७॥

तारोग्रा तालमाला च तकरा तिन्तिडीप्रिया।

तपसः तालसन्दर्भा तर्जयन्ती कुमारिका॥ ७८॥

तोकाचारा तलोद्वेगा तक्षका तक्षकप्रिया।

तक्षकालङ्कृता तोषा तावद्रूपा तलप्रिया॥ ७९॥

तलास्त्रधारिणी तापा तपसां फलदायिनी।

तल्वल्वप्रहरालीता तलारिगणनाशिनी॥ ८०॥

तूला तौली तोलका च तलस्था तलपालिका

तरुणा तप्तबुद्धिस्थास्तप्ता प्रधारिणी तपा॥ ८१॥

तन्त्रप्रकाशकरणी तन्त्रार्थदायिनी तथा।

तुषारकिरणाङ्गी च चतुर्धा वा समप्रभा॥ ८२॥

तैलमार्गाभिसूता च तन्त्रसिद्धिफलप्रदा।

ताम्रपर्णा ताम्रकेशा ताम्रपात्रप्रियातमा॥ ८३॥

तमोगुणप्रिया तोला तक्षकारिनिवारिणी।

तोषयुक्ता तमायाची तमषोढेश्वरप्रिया॥ ८४॥

तुलना तुल्यरुचिरा तुल्यबुद्धिस्त्रिधा मतिः।

तक्रभक्षा तालसिद्धिः तत्रस्थास्तत्र गामिनी॥ ८५॥

तलया तैलभा ताली तन्त्रगोपनतत्परा।

तन्त्रमन्त्रप्रकाशा च त्रिशरेणुस्वरूपिणी॥ ८६॥

त्रिंशदर्थप्रिया तुष्टा तुष्टिस्तुष्टजनप्रिया।

थकारकूटदण्डीशा थदण्डीशप्रियाथवा॥ ८७॥

थकाराक्षररूढाङ्गी थान्तवर्गाथ कारिका।

थान्ता थमीश्वरी थाका थकारबीजमालिनी॥ ८८॥

दक्षदामप्रिया दोषा दोषजालवनाश्रिता।

दशा दशनघोरा च देवीदासप्रिया दया॥ ८९॥

दैत्यहन्त्रीपरा दैत्या दैत्यानां मर्द्दिनी दिशा।

दान्ता दान्तप्रिया दासा दामना दीर्घकेशिका॥ ९०॥

दशना रक्तवर्णा च दरीग्रहनिवासिनी

देवमाता च दुर्लभा च दीर्घाङ्गा दासकन्यका॥ ९१॥

दशनश्री दीर्घनेत्रा दीर्घनासा च दोषहा।

दमयन्ती दलस्था च द्वेष्यहन्त्री दशस्थिता९२॥

दैशेषिका दिशिगता दशनास्त्रविनाशिनी

दारिद्र्यहा दरिद्रस्था दरिद्रधनदायिनी९३॥

दन्तुरा देशभाषा च देशस्था देशनायिका

द्वेषरूपा द्वेषहन्त्री द्वेषारिगणमोहिनी९४॥

दामोदरस्थाननादा दलानां बलदायिनी

दिग्दर्शना दर्शनस्था दर्शनप्रियवादिनी९५॥

दामोदरप्रिया दान्ता दामोदरकलेवरा

द्राविणी द्रविणी दक्षा दक्षकन्या दलदृढा९६॥

दृढासनादासशक्तिर्द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिनी।

दधिप्रिया दधिस्था च दधिमङ्गलकारिणी९७॥

दर्पहा दर्पदा दृप्ता दर्भपुण्यप्रिया दधिः।

दर्भस्था द्रुपदसुता द्रौपदी द्रुपदप्रिया९८॥

धर्मचिन्ता धनाध्यक्षा धश्वेश्वरवरप्रदा।

धनहा धनदा धन्वी धनुर्हस्ता धनुःप्रिया९९॥

धरणी धैर्यरूपा च धनस्था धनमोहिनी

धोरा धीरप्रियाधारा धराधारणतत्परा॥ १००॥

धान्यदा धान्यबीजा च धर्माधर्मस्वरूपिणी

धाराधरस्था धन्या च धर्मपुञ्जनिवासिनी१०१॥

धनाढ्यप्रियकन्या च धन्यलोकैश्च सेविता।

धर्मार्थकाममोक्षाङ्गी धर्मार्थकाममोक्षदा१०२॥

धराधरा धुरोणा च धवला धवलामुखी

धरा च धामरूपा च ध्रुवा ध्रौव्या ध्रुवप्रिया१०३॥

धनेशी धारणाख्या च धर्मनिन्दाविनाशिनी

धर्मतेजोमयी धर्म्म्या धैर्याग्रभर्गमोहिनी॥ १०४॥

धारणा धौतवसना धत्तूरफलभोगिनी

नारायणी नरेन्द्रस्था नारायणकलेवरा१०५॥

नरनारायणप्रीता धर्मनिन्दा नमोहिता

नित्या नापितकन्या च नयनस्था नरप्रिया१०६॥

नाम्नी नामप्रिया नारा नारायणसुता नरा

नवीननायकप्रीता नव्या नवफलप्रिया॥ १०७॥

नवीनकुसुमप्रीता नवीनानां ध्वजानुता।

नारी निम्बस्थितानन्दानन्दिनी नन्दकारिका॥ १०८॥

नवपुष्पमहाप्रीता नवपुष्पसुगन्धिका

नन्दनस्था नन्दकन्या नन्दमोक्षप्रदायिनी१०९॥

नमिता नामभेदा च नाम्नार्त्तवनमोहिनी।

नवबुद्धिप्रियानेका नाकस्था नामकन्यका॥ ११०॥

निन्दाहीना नवोल्लासा नाकस्थानप्रदायिनी

निम्बवृक्षस्थिता निम्बा नानावृक्षनिवासिनी१११॥

नाश्यातीता नीलवर्णा नीलवर्णा सरस्वती

नभःस्था नायकप्रीता नायकप्रियकामिनी११२॥

नैववर्णा निराहारा निवीहाणां रजःप्रिया

निम्ननाभिप्रियाकारा नरेन्द्रहस्तपूजिता११३॥

नलस्थिता नलप्रीता नलराजकुमारिका

परेश्वरी परानन्दा परापरविभेदिका११४॥

परमा परचक्रस्था पार्वती पर्वतप्रिया।

पारमेशी पर्वनाना पुष्पमाल्यप्रिया परा११५॥

परा प्रिया प्रीतिदात्री प्रीतिः प्रथमकामिनी।

प्रथमा प्रथमा प्रीता पुष्पगन्धप्रिया परा११६॥

पौष्यी पानरता पीना पीनस्तनसुशोभना

परमानरता पुंसां पाशहस्ता पशुप्रिया११७॥

पललानन्दरसिका पलालधूमरूपिणी।

पलाशपुष्पसङ्काशा पलाशपुष्पमालिनी॥ ११८॥

प्रेमभूता पद्ममुखी पद्मरागसुमालिनी।

पद्ममाला पापहरा पतिप्रेमविलासिनी॥ ११९॥

पञ्चाननमनोहारी पञ्चवक्रप्रकाशिनी।

फलमूलाशना फाली फलदा फाल्गुनप्रिया॥ १२०॥

फलनाथप्रिया फल्ली फल्गुकन्या फलोन्मुखी।

फेत्कारीतन्त्रमुख्या च फेत्कारगणपूजिता॥ १२१॥

फेरवी फेरवसुता फलभोगोद्भवा फला।

फलप्रिया फलाशक्ता फाल्गुनानन्ददायिनी॥ १२२॥

फालभोगोत्तरा फेला फुलाम्भोजनिवासिनी।

वसुदेवगृहस्था च वासवी वीरपूजिता॥ १२३॥

विषभक्षा बुधसुता ब्लुङ्कारी ब्लूवरप्रदा।

ब्राह्मी बृहस्पतिसुता वाचस्पतिवरप्रदा॥ १२४॥
वेदाचारा वेद्यपरा व्यासवक्त्रस्थिता विभा।
बोधज्ञा वौषडाख्या च वंशीवंदनपूजिता॥ १२५॥
वज्रकान्ता वज्रगतिर्बदरीवंशविवर्द्धीनी।
भारती भवरश्रीदा भवपत्नी भवात्मजा॥ १२६॥
भवानी भाविनी भीमा भिषग्भार्या तुरिस्थिता।
भूर्भुवःस्वःस्वरूपा च भृशार्त्ता भेकनादिनी॥ १२७॥
भौती भङ्गप्रिया भङ्गभङ्गहा भङ्गहारिणी।
भर्ता भगवती भाग्या भगीरथनमस्कृता॥ १२८॥
भगमाला भूतनाथेश्वरी भार्गवपूजिता।
भृगुवंशा भीतिहरा भूमिर्भुजगहारिणी॥ १२९॥
भालचन्द्राभभल्वबाला भवभूतिवीभूतिदा।
मकरस्था मत्तगतिर्मदमत्ता मदप्रिया॥ १३०॥
मदिराष्टादशभुजा मदिरा मत्तगामिनी।
मदिरासिद्धिदा मध्या मदान्तर्गतिसिद्धिदा॥ १३१॥
मीनभक्षा मीनरूपा मुद्रामुद्गप्रिया गतिः।
मुषला मुक्तिदा मूर्त्ता मूकीकरणतत्परा॥ १३२॥
मृषार्त्ता मृगतृष्णा च मेषभक्षणतत्परा।
मैथुनानन्दसिद्धिश्च मैथुनानलसिद्धिदा॥ १३३॥
महालक्ष्मीर्भैरवी च महेन्द्रपीठनायिका।
मनःस्था माधवीमुख्या महादेवमनोरमा॥ १३४॥
यशोदा याचना यास्या यमराजप्रिया यमा।
यशोराशिविभूषाङ्गी यतिप्रेमकलावती॥ १३५॥

रमणी रामपत्नी च रिपुहा रीतिमध्यगा।

रुद्राणी रूपदा रूपा रूपसुन्दरधारिणी॥ १३६॥

रेतःस्था रेतसः प्रीता रेतःस्थाननिवासिनी।

रेन्द्रादेवसुतारेदा रिपुवर्गान्तकप्रिया॥ १३७॥

रोमावलीन्द्रजननी रोमकूपजगत्पतिः।

रौप्यवर्णा रौद्रवर्णा रौप्यालङ्कारभूषणा॥ १३८॥

रङ्गिणा रङ्गरागस्था रणवह्निकुलेश्वरी।

लक्ष्मीः लाङ्गलहस्ता च लाङ्गली कुलकामिनी॥ १३९॥

लिपिरूपा लीढपादा लतातन्तुस्वरूपिणी।

लिम्पती लेलिहा लोला लोमशप्रियसिद्धिदा॥ १४०॥

लौकिकी लौकिकीसिद्धिर्लङ्कानाथकुमारिका।

लक्ष्मणा लक्ष्मीहीना च लप्रिया लार्णमध्यगा॥ १४१॥

विवसा वसनावेशा विवस्यकुलकन्यका।

वातस्था वातरूपा च वेलमध्यनिवासिनी॥ १४२॥

श्मशानभूमिमध्यस्था श्मशानसाधनप्रिया।

शवस्था परसिद्ध्यर्थी शववक्षसि शोभिता॥ १४३॥

शरणागतपाल्या च शिवकन्या शिवप्रिया।

षट्चक्रभेदिनी षोढा न्यासजालदृढानना॥ १४४॥

सन्ध्यासरस्वती सुन्द्या सूर्यगा शारदा सती।

हरिप्रिया हरहालालावण्यस्था क्षमा क्षुधा॥ १४५॥

क्षेत्रज्ञा सिद्धिदात्री च अम्बिका चापराजिता।

आद्या इन्द्रप्रिया ईशा उमा ऊढा ऋतुप्रिया॥ १४६॥

सुतुण्डा स्वरबीजान्ता हरिवेशादिसिद्धिदा।

एकादशीव्रतस्था च एन्द्री ओषधिसिद्धिदा॥ १४७॥
औपकारी अंशरूपा अस्त्रबीजप्रकाशिनी।
इत्येतत् कामुकीनाथ कुमारीणां सुमङ्गलम्॥ १४८॥

त्रैलोक्यफलदं नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम्।
महास्तोत्रं धर्मसारं धनधान्यसुतप्रदम्॥ १४९॥
सर्वविद्याफलोल्लासं भक्तिमान् यः पठेत् सुधीः
स सर्वदा दिवारात्रौ स भवेन्मुक्तिमार्गगः॥ १५०॥
सर्वत्र जयमाप्नोति वीराणां वल्लभो लभेत्
सर्वे देवा वशं यान्ति वशीभूताश्च मानवाः॥ १५१॥
ब्रह्माण्डे ये च शंसन्ति ते तुष्टा नात्र संशयः
ये वशन्ति च भूर्लोके देवतुल्यपराक्रमाः॥ १५०॥
ते सर्वे भृत्यतुल्याश्च सत्यं सत्यं कुलेश्वर
अकस्मात् सिद्धिमाप्नोति होमेन यजनेन च॥ १५३॥
जाप्येन कवचाद्येन महास्तोत्रार्थपाठतः
विना यज्ञैर्विना दानैर्विना जाप्यैर्लभेत् फलम्॥ १५४॥
यः पठेत् स्तोत्रकं नाम चाष्टोत्तरसहस्रकम्
तस्य शान्तिर्भवेत् क्षिप्रं कन्यास्तोत्रं पठेत्ततः॥ १५५॥
वारत्रयं प्रपाठेन राजानं वशमानयेत्
वारैकपठितो मन्त्री धर्मार्थकाममोक्षभाक्॥ १५६॥
त्रिदिनं प्रपठेद्विद्वान् यदि पुत्रं समिच्चति
वारत्रयक्रमेणैव वारैकक्रमतोपि वा॥ १५७॥
पठित्त्वा धनरत्नानामधिपः सर्ववित्तगः

त्रिजगन्मोहयेन्मन्त्री वत्सरार्द्धं प्रपाठतः॥ १५८॥

वत्सरं वाप्य यदि वा भक्तिभावेन यः पठेत्

चिरजीवी खेचरत्त्वं प्राप्य योगी भवेन्नरः॥ १५९॥

महादूरस्थितं वर्णं पश्यति स्थिरमानसः

महिलामण्डले स्थित्त्वा शक्तियुक्तः पठेत् सुधीः॥ १६०॥

स भवेत्साधकश्रेष्ठः क्षीरी कल्पद्रुमो भवेत्

सर्वदा यः पठेन्नाथ भावोद्गतकलेवरः॥ १६१॥

दर्शनात् स्तम्भनं कर्त्तुं क्षमो भवति साधकः

जलादिस्तम्भने शक्तो वह्निस्तम्भादिसिद्धिभाक्॥ १६२॥

वायुवेगी महावाग्मी वेदज्ञो भवति ध्रुवम्

कविनाथो महाविद्यो वन्धकः पण्डितो भवेत्॥ १६३॥

सर्वदेशाधिपो भूत्त्वा देवीपुत्रः स्वयं भवेत्

कान्तिं श्रियं यशो वृद्धिं प्राप्नोति बलवान् यतिः॥ १६४॥

अष्टसिद्धियुतो नाथ यः पठेदर्थसिद्धये।

उज्जटेरण्यमध्ये च पर्वते घोरकानने॥ १६५॥

वने वा प्रेतभूमौ च शवोपरि महारणे।

ग्रामे भग्नगृहे वापि शून्यागारे नदीतटे॥ १६६॥

गङ्गागर्भे महापीठे योनिपीठे गुरोर्गृहे

धान्यक्षेत्रे देवगृहे कन्यागारे कुलालये॥ १६७॥

प्रान्तरे गोष्ठमध्ये वा राजादिभयहीनके

निर्भयादिस्वदेशेषु शिलिङ्गालयेथवा॥ १६८॥

भूतगर्त्ते चैकलिङ्गे वा शून्यदेशे निराकुले

अश्वत्थमूले बिल्वे वा कुलवृक्षसमीपगे॥ १६९॥

अन्येषु सिद्धदेशेषु कुलरूपाश्च साधकः।

दिव्ये वा वीरभावस्थो यष्ट्वा कन्यां कुलाकुलै॥ १७०॥

कुलद्रव्यैश्च विविधैः सिद्धिद्रव्यैश्च साधकः

मांसासवेन जुहुयान्मुक्तेन रसेन च॥ १७१॥

हुतशेषं कुलद्रव्यं ताभ्यो दद्यात् सुसिद्धये

तासामुच्छिष्टमानीय जुहुयाद् रक्तपङ्कजे॥ १७२॥

घृणालज्जाविनिर्मुक्तः साधकः स्थिरमानसः

पिबेन्मांसरसं मन्त्री सदानन्दो महाबली॥ १७३॥

महामांसाष्टकं ताभ्यो मदिराकुम्भपूरितम्।

तारो माया रमावह्निजायामन्त्रं पठेत् सुधीः॥ १७४॥

निवेद्य विधिनानेन पठित्त्वा स्तोत्रमङ्गलम्

स्वयं प्रसादं भुक्त्वा हि सर्वविद्याधिपो भवेत्॥ १७५॥

शूकरस्योष्ट्रमांसेन पीनमीनेन मुद्रया

महासवघटेनापि दत्त्वा पठति यो नरः॥ १७६॥

ध्रुवं स सर्वगामी स्याद् विना होमेन पूजया।

रुद्ररूपो भवेन्नित्यं महाकालात्मको भवेत्॥ १७७॥

सर्वपुण्यफलं नाथ क्षणात् प्राप्नोति साधकः

क्षीराब्धिरत्नकोषेशो वियद्व्यापी च योगिराट्॥ १७८॥

भक्त्याह्लादं दयासिन्धुं निष्कामत्त्वं लभेद् ध्रुवम्

महाशत्रुपातने च महाशत्रुभयार्दिते॥ १७९॥

वारैकपाठमात्रेण शत्रूणां वधमानयेत्

समर्दयेत् शत्रून् क्षिप्रमन्धकारं यथा रविः॥ १८०॥

उच्चाटने मारणे च भये घोरतरे रिपौ

पठनाद्धारणान्मर्त्यो देवा वा राक्षसादयः॥ १८१॥

प्राप्नुवन्ति झटित् शान्तिं कुमारीनामपाठतः

पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामकरे तथा॥ १८२॥

धृत्वा पुत्रादिसम्पत्तिं लभते नात्र संशयः॥ १८३।

ममाज्ञया मोक्षमुपैति साधको।

गजान्तकं नाथ सहस्रनाम च

पठेन्मनुष्यो यदि भक्तिभावत--

स्तदा हि सर्वत्र फलोदयं लभेत् च॥ १८४॥

मोक्षं सत्फलभोगिनां स्तववरं सारं परानन्ददं

ये नित्यं हि मुदा पठन्ति विफलं सार्थञ्च चिन्ताकुलाः

ते नित्याः प्रभवन्ति कीतीकमले श्रीरामतुल्यो जये

कन्दर्पायुततुल्यरूपगुणिनः क्रोधे च रुद्रोपमाः॥ १८५॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्युपचर्याविन्यासे सिद्धमन्त्र-- प्रकरणे दिव्यभावनिर्णये अष्टोत्तरसहस्रनाममङ्गलोल्लासे दशमः पटलः॥ १०॥